5. अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. *'मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज़ की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है।'* **लेखिका के इस विचार से क्या आप सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।**

उत्तर–ईश्वर ने मनुष्य को बहुत कुछ दिया है। देखने, सुनने, सूँघने आदि की शक्ति और क्षमताएँ बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। हम ईश्वर द्वारा दी गई इन क्षमताओं का महत्त्व समझते ही नहीं। हमें ईश्वर ने जो कुछ दिया है, उसे भूल जाते हैं, उसका आनंद नहीं लेते। हमारे पास जो चीज़ नहीं है, उसकी उम्मीद लगाए रहते हैं। उसके लिए ही परेशान रहते हैं। लेखिका के इस विचार से मैं पूरी तरह से सहमत हूँ। यह जीवन की सच्चाई है। यदि ऐसा न हो तो मनुष्य सदा प्रसन्न रहे। जो कुछ उसे प्राप्त है, इसके लिए ईश्वर को सदा धन्यवाद दे और अपनी क्षमताओं का पूरा-पूरा लाभ उठाए। पर ऐसा है नहीं। वह अपनी क्षमताओं को पहचानता ही नहीं और उसके लिए सदा परेशान रहता है जो उसके पास नहीं है।

प्रश्न 2. लेखिका ने किसे नियामत माना है? उससे क्या किया जा सकता है?

उत्तर–लेखिका दृष्टि को ईश्वर की देन मानती है। दृष्टि ईश्वर द्वारा दी गई नियामत है। यह साधारण चीज़ नहीं। दृष्टि से हम जीवन में अनेक प्रकार की खुशियाँ ला सकते हैं। यह दृष्टि ही है जिसका सही उपयोग कर मानव जितना चाहे उतनी उन्नति कर सकता है। दृष्टि जीवन में हर प्रकार के सुख पाने का माध्यम है। यह दृष्टि ही है जिससे हम स्वावलंबी तो बनते ही हैं, समाज को भी उन्नत कर सकते हैं।

प्रश्न 3. इस पाठ से हमें क्या संदेश मिलता है?

उत्तर–इस पाठ से यह संदेश मिलता है कि जीवन जीने के लिए मनुष्य के पास जो साधन उपलब्ध हो उनसे संतुष्ट रहना चाहिए। यदि किसी चीज़ की कमी हो तो उसके लिए व्यथित नहीं होना चाहिए।